सामाजिक नियंत्रण और धर्म

धर्म अनेक विश्वासों और आचरणों की वह संगठित व्यवस्था है, जिसका सम्बंध कुछ अलौकिक विश्वासों तथा पवित्रता की भावना से होता है। इस रूप में सामाजिक संगठन तथा व्यक्ति के व्यवहारों को प्रभावित करने में धर्म का विशेष योगदान है।
धर्म को परिभाषित करते हुए टायलर लिखते हैं "धर्म का अर्थ किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास करना है।"
मैलीनोवस्की अपनी पुस्तक "Magic, Science, Religion and other essays" में लिखते हैं कि "धर्म क्रिया की एक विधि और विश्वासों की व्यवस्था है। इस प्रकार धर्म में सामाजिक तत्वों के साथ व्यक्तिगत अनुभवों का भी समावेश होता है।"

धर्म को उसकी विशेषताओं के आधार पर बेहतर ढंग से जाना जा सकता है जैसे धर्म अलौकिक शक्ति में विश्वास के साथ ही एक सैद्धान्तिक व्यवस्था है। धार्मिक क्रियाओं और कर्मकाण्डों का समावेश, प्रतीक और पौराणिक गाथाएं, उद्वेगपूर्ण अभिव्यक्ति, पवित्रता की भावना, तर्क का अभाव, नियमों व निषेधों का समावेश एवं धार्मिक संस्तरण जैसी विशेषताओं को धारण करता है।

धर्म के द्वारा व्यक्ति के आचरण को आन्तरिक रूप से नियंत्रित किया जाता है, यह कार्य राज्य भी नहीं कर सकता, इसलिए धर्म सामाजिक नियंत्रण की महत्वपूर्ण अनौपचारिक साधन है। धर्म का महत्व बताते हुए थॉमस ओडिया "Sociology of Religion" में लिखते हैं कि "धर्म व्यक्ति का समूह से एकीकरण करता है, अनिश्चितता की स्थिति में उसकी सहायता करता है, निराशा के क्षणों में उसे ढाढ़स बंधाता है, सामाजिक लक्ष्यों के प्रति व्यक्ति को जागरूक बनाता है, आत्मबल में वृद्धि करता है और एक दूसरे के समीप आने की भावना को

प्रोत्साहन देता है।" धर्म के द्वारा लोगों को यह विश्वास दिलाया जाता है कि धार्मिक नियमों के पालन से ही सांसारिक सफलता मिलती है। ईश्वर के न्यायालय में सभी को अपने कर्मों का फल मिलता है। यह भावना व्यक्ति को बुरे कार्य करने से रोकती है। धार्मिक विश्वास व्यक्तियों में त्याग, सच्चाई, ईमानदारी, सेवा सहनशीलता जैसे नैतिक गुणों के विकास पर जोर देता है और व्यक्तियों को यह विश्वास दिलाता है कि इन नैतिक गुणों के द्वारा ही समाज बहुत से बाधाओं से बच जाता है। इन धार्मिक विश्व नैतिक नियमों के पालन से विपत्तियों में व्यक्ति में निराशा उत्पन्न नहीं होती और वह इसे ईश्वर की इच्छा मानकर अपने कर्तव्यों को पूरा करता है। धर्म के इन गुणों के कारण ही कहा जाता है कि धर्म व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है।

इसके अतिरिक्त धर्म सामूहिकता को प्रोत्साहन देकर सामाजिक जीवन को संगठित बनाता है। धर्म हमें यह सीख देता है कि हमारा जीवन केवल अपने लिए ही नहीं है बल्कि इसपर सम्पूर्ण समाज का अधिकार है। यह भाव सामाजिक एकीकरण में वृद्धि करता है। एक धर्म से सम्बन्धित सभी व्यक्ति जब समान तरह से आचरण करते हैं तो उनके विचारों में भी समानता उत्पन्न होती है। धर्म ही मनुष्य को विभिन्न परिस्थितियों में उसके कर्तव्य का बोध कराता है, जिससे कि व्यक्ति के समाज-विरोधी आचरण पर नियंत्रण रहता है।

प्रत्येक धर्म में अनेक कर्मकाण्ड, उत्सव, आयोजन इसकारण विकसित किए गए कि व्यक्ति के विनोदी प्रवृत्ति को संतुष्ट किया जा सके। धर्म द्वारा किया जाने वाला यह स्वस्थ मनोरंजन मानव प्रसन्नता को बढ़ाने

Scanned by CamScanner

के साथ ही चरित्र निर्माण में भी योगदान करता है। धर्म का एक अन्य महत्वपूर्ण गुण अपने विश्वासों और क्रियाकलापों के द्वारा व्यक्ति को स्वयं अपने बारे में मूल्यांकन करने का प्रोत्साहन देता है। जब हम अपने किसी प्रियजन की कठिनाइयों का मन्थन करते हैं तो आत्मिक विकास को ही हम जीवन का वास्तविक सार मानने लगते हैं।

इस आधार पर देखें तो धर्म चाहे किसी भी रूप में हो, यह नैतिक जीवन और सर्वोच्च मानव-मूल्यों में वृद्धि का आधार है।

Scanned by CamScanner